Q 6 भारत के बिमारू राज्यों मे भारतीय जनसंख्या के संरचना और परिवार नियोजन के कार्यक्रम का मूल्यांकन करें? इन राज्यों मे परिवार नियोजन के कार्यक्रम के असफलता के कारणों की चर्चा करें?

भारत पहला ऐसा देश है जिसने सन 1952 मे परिवार नियोजन कार्यक्रम को औपचारिक रूप से स्वीकार किया परन्तु जनसंख्या वृद्धि पर गंभीर चिन्तन तीसरी पंचवर्षीय योजना (1961-66) मे आरंभ हुआ और जनसंख्या वृद्धि की दर को उचित समय-अवधि के अन्दर सीमित करने का निर्णय लिया गया। परिवार नियोजन एक ऐसा उपाय है जिसमे पात्र दम्पत्तियों द्वारा अपनी इच्छानुसार परिवार को सिमित रखने तथा उचित समयान्तर के पश्चात सन्तान उत्पन्न करने से है। अनचाही सन्तानोत्पत्ति को रोकना ही परिवार नियोजन का मूल उद्देश्य है। यहाँ बीमारू राज्य का तात्पर्य ~~बीमार~~ बिहार, मध्य प्र० राजस्थान और उत्तर प्रदेश है। अत: मुझे इन राज्यो मे परिवार-नियोजन कार्यक्रम का मूल्यांकन करना होगा।

BIMARU
Bi = बिहार
MA = म० प्र०
R = राजस्थान
U = उ० प्र०

बिहार, म० प्र०, राजस्थान, और उत्तर प्रदेश के अंग्रेजी नामों के प्रथमाक्षरों के मिलाव से बना यह (बीमारू) जुमला पहले वाले अन्य आपत्तिजनक बातों से भी ज्यादा अपमानजनक है लेकिन कहीं न कहीं जगड़े को लंगड़ा कहने जैसा ही है। सन् 2000 मे इन राज्यों की जन्मदर अन्य राज्यो से कहीं अधिक है। इसका प्रमुख कारण परिवार-नियोजन कार्यक्रमों की असफलता का होना है। इन राज्यों मे परिवार नियोजन कार्यक्रम मात्र कागजी और रह गया है। यहाँ की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थिति भी कम जीम्मेवार नहीं है परिवार नियोजन के असफलता पर। जैसा की स्पष्ट है कि अन्य राज्यों की अपेक्षा इन राज्यों की शिक्षा का प्रतिशत कम है अत: यहाँ के लोग परिवार नियोजन कार्यक्रम अपनाने मे संकोच का अनुभव करते है

जनसंख्या संरचना का अभिप्राय आयु, लिंग, जाति भाषा और व्यवसाय के अनुसार किसी राज्य के कुल जनसंख्या वितरण से है। जनसंख्या की संरचना के अन्तर्गत किसी राज्य की जनसंख्या के इन्हीं समूहों को मापने का प्रयास किया जाता है। जनसंख्या को बताने वाले घटकों का हम विभिन्न विशेषताओं के अनुसार ही अध्ययन कर सकते हैं। जैसे इनके लिंग-अनुपात क्या है, साक्षरता का अनुपात क्या है, धर्म और जाति, भाषा एवं बोली के अनुसार वितरण क्या है आदि।

भारत के इन बीमारू राज्यों के जनसंख्या संरचना के अध्ययन के पश्चात हमें यह ज्ञात होता है कि इन राज्यों में शिक्षा, लिंगानुपात, भाषा एवं धर्म में अत्यधिक मात्रा में विभिन्नताएँ है जैसे- बिहार में 911/1000 स्त्रियों की संख्या है तो शिक्षा में 52% पुरुष तो मात्र 23% महिलाएँ शिक्षित है। इसी तरह उत्तर प्रदेश में ग्रामीण 36.6% तथा शहरी 61% पुरुष तथा 15.02% ग्रामीण तथा 56.3% शहरी महिला शिक्षित है। लिंगानुपात 879/1000 उ०प्र० में है। लगभग इसी तरह की बात अन्य राज्य, मध्यप्रदेश तथा राजस्थान में है। इन बीमारू राज्यों में धर्म तथा भाषा के आधार पर भी विभिन्नताएँ है।

अतः उपर्युक्त चर्चाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि बीमारू राज्य वास्तव में बीमारू राज्य है। जिसमें जनसंख्या संरचना में अप्रत्याशित कमी है तथा जनसंख्या असन्तुलन में है तथा परिवार नियोजन के असफलता के परिणाम कारण जनसंख्या विस्फोटक स्थिति से गुजर रही है। हालांकि भारत सरकार ने 9वीं पंचवर्षीय योजना में परिवार नियोजन पर कुल व्यय का 3% तो खर्च करने का लक्ष्य रखा है। खासकर इन बीमारू राज्यों को ध्यान में रख कर ऐसा लक्ष्य रखा गया है। अतः इन राज्यों की जनसंख्या थोड़ी सुधरेगी यह आशा की जाती है।

बिहार = 38.48
U.P. — कुल = 41.60
स्त्री = 25.31

इन राज्यों मे परिवार नियोजन कार्यक्रम के असफलता के कारण :-

प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951-56) के प्रारम्भ से ही परिवार नियोजन के महत्व को एक प्रमुख विकास कार्यक्रम के अलावे एक राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में स्वीकार किया है। लेकिन परिवार नियोजन कार्यक्रम की अपेक्षित सफलता विशेषकर मध्यम वर्ग एवं नगरीय क्षेत्र मे ही कुछ मिल पायी है। गन्दी बस्तियों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में इस कार्यक्रम का बहुत कम प्रभाव पड़ा है।

बीमारू राज्यों में भी उपर्युक्त सभी बातें लागू होती है। इन राज्यों में परिवार नियोजन द्वारा जनसंख्या को रोकने के विभिन्न उपायों तथा उपकरणों का प्रयोग किया गया। कई प्रमुख बाधाओं के कारण इन राज्यों में परिवार नियोजन कार्यक्रम असफल रहे है जो प्रमुख बाधाएँ निम्नलिखित है :—

(i) रूढ़िवादिता का विशिष्ट महत्व :- इन राज्यों में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया धीमी रही है जिससे यहाँ परम्परा एवं रूढ़िवादिता का अभी भी प्रभाव है। यहाँ अधिक संतान उत्पत्ति परम्परा के अनुकूल समझी जाती है। इसलिए परिवार नियोजन मे रूचि कम ली जाती है। अतः यहाँ परिवार नियोजन कार्यक्रम असफल है।

(ii) आधुनिक शिक्षा का अभाव :— बीमारू राज्यों की शिक्षा अन्य राज्यों की अपेक्षा कम है तथा यह स्पष्ट है कि बिना शिक्षा के समाज अंधकार मे है। आधुनिक शिक्षा के कमी के कारण विभिन्न लाभों से वे अवगत नही है, फलस्वरूप इसके उपायों को अपनाने मे रूचि नहीं लेते है। अतः परिवार नियोजन यहाँ असफल है।

(iii) महिलाओं मे शिक्षा का अभाव :- उपर के जनसंख्या संरचना के विश्लेषण से हम स्पष्टतः देखा गया है कि राज्यों मे महिलाओं की शिक्षा की ~~ज्ञान है तथा~~ ये स्थिति बद से बत्तर है। परिवार नियोजन की सफलता का मूल शर्त है स्त्रियों का शिक्षित

करना। अशिक्षा के कारण महिलाएँ परिवार-नियोजन के महत्व एवं आवश्यकता को समझ नहीं पाती हैं। अतः यहाँ परिवार-नियोजन कार्यक्रम असफल हो रहे हैं।

(iv) परिवार नियोजन कार्यक्रम में इन राज्यों की उपेक्षा:— सरकारी योजनाओं को इन राज्यों को उपेक्षा के नजर से देख कर वितरण किया जाता है सरकार की इस नजरिया के कारण सभी कर्मचारी अपने कामों में रूचि नहीं लेते तथा उपलब्ध सामग्री भी कम पड़ जाती है। जिससे परिवार नियोजन कार्यक्रम असफल हो रहे हैं।

(v) उत्प्रेरणा वाले गुणों की कमी:— परिवार नियोजन कार्यक्रम मात्र परिवार-विशेष या क्षेत्र-विशेष वाला कार्यक्रम नहीं, बल्कि यह राज्य हित का एक महत्वपूर्ण एवं आवश्यक कार्यक्रम है। प्रायः इस कार्यक्रम से सम्बन्धित सरकारी कर्मचारी एक सरकारी कार्यक्रम समझकर अपना कर्तव्य करते हैं। वे आम लोगों को विशेषकर गरीब, अनपढ़ ग्रामीणों को पूरी तरह उत्प्रेरित नहीं करते हैं ताकि वे अपने-अपने परिवार को नियोजित कर पाएँ।

(vi) जनसंख्या कम करने सम्बन्धी कानूनों की अवहेलना:— इन राज्यों में अशिक्षित, गरीब एवं परम्परावादी लोगों का बाहुल्य वाले लोग नियम एवं कानून की अवहेलना सामान्य घटना मानते हैं। बाल-विवाह हेतु समाप्ति हेतु कानून बनाए गये जिसे सामान्य रूप से पालन नहीं किया जाता। फलतः जनसंख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हो रही है।

(vii) छोटे परिवार के मानक में कमी:— बीमारू राज्यों में परिवार का आदर्शात्मक एवं संख्यात्मक स्वरूप संयुक्त या बड़ा परिवार बना हुआ है सरकारी एवं गैर-सरकारी प्रयत्न इस दिशा में किए जाते रहे हैं कि जन्म-दर पर रोक हेतु छोटे परिवार मानक संख्यागत हो जाय। इस कमी का प्रमुख कारण सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक पिछड़ापन माना जा सकता है।

(viii) धार्मिक मान्यताएँ:— अन्य राज्यों की अपेक्षा ये राज्य अधिक रूढ़िवादी एवं धार्मिक मान्यता

को पकड़े हुए है। विभिन्न धर्मों में इस तरह की मान्यताओं की चर्चा की जाती है कि जन्म पर नियंत्रण करना गर्भपात करना आदि गैर-धार्मिक काम माना जाता है। अतः ऐसा करना पाप माना जाता है। ऐसी मान्यताओं के कारण परिवार नियोजन में काफी बाधा उपस्थित हो जाती है।

(ix) बाल-विवाह की धार्मिक मान्यता :- भारतीय समाज के कुछ भागों में बाल-विवाह की एक लम्बी परम्परा बन गयी है। खास कर इन राज्यों में बाल-विवाह धार्मिक कृति माना जाता है। कम उम्र में बच्चे-बच्चियों की शादी कर दी जाती है, फलस्वरूप कम उम्र से ही बच्चे पैदा होने लगते हैं। इससे परिवार नियोजन में बड़ी बाधा उपस्थित हो जाती है।

(x) गरीबों की संस्कृति :- इन राज्यों में गरीबों की संख्या अन्य राज्यों की तुलना में सर्वाधिक है तथा गरीबों में यह भ्रम है कि जितना ही संतान होगा उतनेही आर्थिक स्थिति ठिक होगी। गरीबों के पास मनोरंजन का कोई और साधन न होने के कारण वे यौन क्रिडा में सदा लिप्त रहते हैं तथा परिवार नियोजन नहीं कराते हैं। इसकारण से जनसंख्या वृद्धि रात दिन दुनी रात चौगुनी हो रही है।

(xi) राजनीतिक कारण :- प्रजातंत्र में वोट का अत्यधिक महत्व है। जिस दिनों से जाति की राजनीति राजनीति होने लगी है तो लोग अपने जाति की जनसंख्या बढ़ाने लगे हैं। इस कारण राजनेता परिवार नियोजन नहीं अपनाने के परोक्ष परोक्ष सलाह देने लगते हैं। इस कारण परिवार-नियोजन को जन आंदोलन के रूप में नहीं लिया जाता है।

उपर्युक्त ...

Scanned with CamScanner

इन राज्यों की जनसंख्या ~~दिन दुनी व सुरसा~~
सुरसा के मुख की भाँति बढ़ी जा रही है।
भारत सरकार को चाहिए की इन राज्यों के
लिए एक विशेष अभियान एवं चलाए ताकी
जनसंख्या विस्फोट की स्थिति से बचा जाए।
यह और बात है कि प्रत्येक
राज्य जनसंख्या को संतुलन बनाने के लिए
एक अपना ढंग का जनसंख्या नीति प्रस्तुत करता
है मगर मात्र एक बिहार ऐसा राज्य है
जिसका कोई अपना जनसंख्या नीति नहीं है। यह
केन्द्र के जनसंख्या नीति पर आश्रित रहता है।

——*——

Scanned with CamScanner